17 मई 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अन्दर के कषायभावों का त्याग न होने पर बाहर सबकुछ त्यागें तो भी कोई लाभ नहीं ? सर्प कांचली के छोड़ देने से विषरहित नहीं होता।

ह्न शलाका पुरुष, भाग ह्न 1

वर्ष : 32, अंक : 4 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मई (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ऐतिहासिक नगरी हस्तिनापुर में ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सव

हस्तिनापुर (मेरठ) : यहाँ शान्तिवन (प्रथम नसियाँजी) में नवनिर्मित श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं कलात्मक मानस्तम्भ में विराजमान होने वाले जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हेतु गुरुवार, दिनाँक 23 अप्रैल से बुधवार, 29 अप्रैल 2009 तक श्रीमज्जिनेन्द्र जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन कैलाश पर्वत रचना के सामने स्थित विशाल मोती धनुष मंडप (हस्तिनापुरी) में आचार्य श्री धर्मभूषणजी महाराज के ससंघ सानिध्य में अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव के विधिनायक 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान थे।

महोत्सव में प्रतिदिन मुनिसंघ के समय-समय पर हुए प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक मार्मिक व्याख्यानों को सुनकर समाज इतनी प्रभावित हुई कि अनेक नगरों के लोगों ने भावना व्यक्त की है कि वे अपने पंचकल्याणकों में डॉ. भारिल्ल साहब को अवश्य आमंत्रित करेंगे। आपके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के भी मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुए प्रवचनों को सराहा गया। साथ ही पण्डित प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, व पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली आदि के भी प्रवचन हुए।

पंचकल्याणक की समस्त प्रतिष्ठा विधि दिगम्बर जैन समाज के सर्वमान्य, उच्चकोटि के सुप्रतिष्ठित विद्वान स्व.पण्डित श्री नाथूलाल जी संहितासूरी (इन्दौर) के परम शिष्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल ने शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई। प्रतिष्ठाचार्य पण्डित श्री ब्र. अभिनन्दकुमारजी भी जन्म कल्याणक के दिन आ गये थे और प्रतिष्ठाकार्यो में सहयोग कर रहे थे। आहारदान के समय मुनिराज की प्रतिमा को अपने मस्तक पर धारण करने का काम उन्होंने ही किया था। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित कमलेशजी शास्त्री हस्तिनापुर, पण्डित विजयजी जैन हस्तिनापुर थे। साथ ही श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित पीयूष शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री खतौली, पण्डित मनीष सिद्धान्त नागपुर, पण्डित निकलंक शास्त्री कोटा, पण्डित निखिल शास्त्री कोतमा, एवं वर्तमान छात्र पण्डित विवेक शास्त्री दलपतपुर, पण्डित विकास शास्त्री इन्दौर, पण्डित एकत्व शास्त्री खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्र शास्त्री बक्स्वाहा, पण्डित विक्रांत शास्त्री एवं पण्डित आशीष शास्त्री भगवाँ आदि सभी का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रतिदिन इन्द्रसभा-राज्यसभा एवं विविध ज्ञानवर्धक आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया। इन्द्रसभा, राजसभा एवं प्रासंगिक सभी कार्यक्रमों का सफल संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। आयोजन में श्री सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा के मधुर प्रासंगिक गीतों ने चार चाँद लगा दिये। जन्मकल्याणक के दिन रात्रि में पालना झूलन हेतु मैनपुरी (उ.प्र.) से आया काँच से निर्मित 54 फीट का विशाल विश्वप्रसिद्ध पालना उपस्थित जन समुदाय के आकर्षण का केन्द्र रहा।

इस मांगलिक प्रसंग पर सम्पूर्ण देश से पधारे हुए श्रेष्ठी वर्गों में दिल्ली से आत्मार्थी ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री अजितप्रसादजी जैन, श्री पृथ्वीचंदजी जैन, श्री आदीशजी जैन, परमसंरक्षक श्री त्रिलोकचंदजी जैन भारतनगर, संरक्षक श्री जयपालजी जैन दरीबा, पण्डित राकेश शास्त्री लोनी, मंगलसेनजी जैन विश्वासनगर; परमसहायक श्री श्रीरामजी जैन डिप्टीगंज, विदिशा (म.प्र.) से पण्डित शिखरचंदजी जैन, मैनपुरी (उ.प्र.) से पण्डित प्रकाशचंदजी ज्योतिषाचार्य, भिण्ड (म.प्र.) से श्री सुरेशचंदजी जैन, खतौली (उ.प्र.) से श्री नरेंद्रकुमारजी सर्राफ, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से श्री मनोजकुमारजी जैन, खेकडा (उ.प्र.) से ब्र. विनोद जेन, ऋषिकेश (हरिद्वार) से त्रसपालजी जैन आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। साथ ही बागपत, गाजियाबाद, शामली, सहारनपुर, सरधना, खतौली, मेरठ, बडौत, कांधला, खेकडा, महलका, भोगाँव, जसवंतनगर आदि अनेक नगरों से भी सैकडो मुमुक्षु भाई पधारे।

मंगलायतन अलीगढ से श्री पवनकुमारजी भी आ गये थे। उन्होंने डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पूर्व सभा में दिसम्बर 2010 में मंगलायतन विश्वविद्यालय में होनेवाले पंचकल्याणक के लिए सभी को आमंत्रित किया।

पंचकल्याणक के अंतिम दिन शांति यज्ञ के अवसर पर साहित्य की कीमत कम करने के लिए 56000 रुपये की राशि प्राप्त हुई। आयोजन में लगभग 95000 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। 20,648 घंटे की डी.वी.डी. और 2000 घण्टे की सी.डी. भी घर-घर पहुँची।

महोत्सव में लगभग 8-10 हजार साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया। जिनमें करीब 3 हजार मुमुक्षु समाज भी सम्मिलित रही।

ह्न नवनीत जैन, मुख्य संयोजक

सम्पादकीय - 28

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

देवगढ़ क्षेत्र के निकट एक ऐसी नगरी है, जहाँ धार्मिक वातावरण हमेशा अपनी चरम सीमा पर रहा है। वह जैन समाज का ऐसा केन्द्र रहा, जहाँ विभिन्न विचारधारा वाले साधु-संतों का आवागमन बना ही रहता है। इस कारण वहाँ की बहुसंख्य जैन समाज में साधु-संतों की भक्ति कुछ अधिक ही है। वहाँ समाज का सोच है कि ह्न गृहस्थों को मुनियों की परीक्षा करने का अधिकार नहीं है, पुराणों में भी ऐसा लिखा मिल जाता है कि चार रोटियाँ देने के लिए साधु की क्या परीक्षा करना ?

यह सच है कि चार रोटियों के लिए परीक्षा नहीं करना चाहिए; परन्तु व्यवहार सम्यग्दर्शन के निमित्त सच्चे-देव-गुरु का यथार्थ स्वरूप तो जानना ही होता है। अन्यथा मोक्षमार्ग की शुरुआत कैसे होगी? क्योंकि व्यवहार सम्यग्दर्शन में सच्चे-देव-गुरु की यथार्थ श्रद्धा अनिवार्य है। अब तक इस बात की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। अस्तुः

वहाँ के अनेक विशालकाय जिनमन्दिर इस बात के प्रतीक हैं कि वह नगरी प्राचीन काल से ही धन और धर्म से समृद्ध जैननगरी रही है। इतना ही नहीं वहाँ जैन समाज को अभी भी धर्म से इतना लगाव है कि शैक्षणिक समितियों एवं सामाजिक संगठनों की पार्टियाँ भी निश्चय और व्यवहारनय के नाम से प्रचलित हैं।

भले ही बहुसंख्य समाज को नयज्ञान का सूक्ष्म अध्ययन नहीं रहा हो, परन्तु इतना तो सभी जानते ही हैं कि स्याद्वाद शैली में नयों के कथन से ही वस्तु का स्वरूप समझाया जाता है, फिर भी समझ की कमी के कारण श्रोताओं में किन्हीं को निश्चयनय का पक्ष हो जाता है तो किसी को व्यवहार का; जबकि जिनवाणी में मुख्य-गौण रूप से दोनों नयों की चर्चा की गई है। अस्तु :-

जहाँ इतना बड़ा समाज हो, वहाँ मतभेद तो स्वाभाविक ही हैं। एक ही घर में पिता-पुत्रों में, भाई-भाई में, पति-पत्नी में भी मतभेद देखे जाते हैं, फिर इतने बड़े समाज की विचारधारा एक कैसे हो सकती है? अच्छी बात यह है कि मतभेद के बावजूद भी परस्पर में मनभेद नहीं है।

व्यापार में सब साथ-साथ रहते हैं। कभी भी परस्पर में वैर-विरोध नहीं रखते। मतभेद के बावजूद भी सामूहिक धार्मिक कार्यक्रमों में एक दूसरे का सहयोग भी करते हैं, परन्तु सामाजिक चुनावी वातावरण ही ऐसा होता है कि इसमें कोई कितना भी सावधान रहे, सजग रहे; फिर भी सामाजिक एकता प्रभावित हुए बिना नहीं रहती; क्योंकि चुनावी भूत ही ऐसा होता है, जो सर पर चढ़कर बोलता है। इसकारण कभी-कभी हल्के हथकण्डे अपनाना भी अस्वाभाविक नहीं है। परिणामस्वरूप वातावरण में क्षणिक/किंचित् कड़वाहट हो जाती है।

ह्न ह्न ह्न

उस नगर का जैन समाज भी आचार्यश्री के प्रवचन सुनने प्रतिदिन देवगढ़ तो पहुँचता ही था। एक मध्यस्थ श्रोता से जब आचार्यश्री को उस नगर की यह परिस्थिति ज्ञात हुई तो आचार्यश्री ने अधिक कुछ न कहकर दोनों पक्षों को लक्ष में रखकर यह सलाह दी कि ''जिनमंदिरों के मुखिया अपने-अपने जिनमन्दिरों के मुख्य द्वार पर समयसार की आत्मख्याति टीका में उद्धृत यह गाथा अवश्य लिखाओ ह्न

'जदि जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारणिच्छए मुणह।
एकेण विणा छिज्जदि तित्थं अण्णेण पुण तच्चं।।

अर्थात् यदि जिनमत में प्रवर्तन करना चाहते हो तो निश्चय-व्यवहार इन दोनों नयों में से किसी को भी मत छोड़ो; क्योंकि यदि निश्चयनय का पक्षपाती होकर व्यवहारनय की उपेक्षा करोगे तो धर्मतीर्थ प्रवर्तन का धर्मोपदेश का नाश हो जायेगा और यदि व्यवहार का पक्षपाती होकर निश्चयनय की उपेक्षा करोगे, छोड़ दोगे तो तत्वों का लोप हो जायेगा। अतः दोनों नयों के स्वरूप को यथार्थ समझकर जिनवाणी के रहस्य को जानो; क्योंकि जिनवाणी की प्ररूपणा दोनों नयों से हुई है। इस कारण दोनों नयों का जिनवाणी में अपना-अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः हम नयों की पार्टियाँ बना कर इन्हें राग-द्वेष का कारण न बनायें।'

यह सुनकर श्रोताओं को मार्गदर्शन भी मिला और नयों को समझने की जिज्ञासा भी जगी।

आचार्य श्री ने आगे कहा ह्न ''निश्चयनय और व्यवहारनय दोनों जिनवाणी माता के दो नेत्र हैं। ऐसे कौन मातृ भक्त पुत्र होंगे जो परस्पर की लड़ाई में अपनी माता को कांणा करना चाहेंगे।''

श्रोताओं की ओर से आवाज आई ह्न ''इस समाज में तो जिनवाणी माता का ऐसा कोई कपूत नहीं है जो जिनवाणी माँ को कांणा करना चाहेगा? हाँ, जब बात सामने आ ही गई तो हे स्वामी! आप आज इसी विषय का स्पष्टीकरण करने की अनुकम्पा करें, ताकि हम सब समाज का भ्रम भंग हो जाय और हम सब एकता के सूत्र में ऐसे बँध जायें जो कभी टूटने का नाम भी न ले।''

आचार्यश्री समाज की नियमित स्वाध्याय न करने की वृत्ति से सुपरिचित थे। अतः नयों जैसे कठिन विषय को सरलता से समझाते हुए उन्होंने कहा ह्न ''देखो, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय की टीका के मंगलाचरण में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने एक छन्द में ही निश्चय व व्यवहार के यथार्थ स्वरूप को न जानने वालों की तीन तरह की भूलों का उल्लेख करते हुए दोनों नयों का जो समन्वय

किया है, वह सबके समझने लायक तो है ही, अपनी भूल को सुधारने के लिए भी पर्याप्त है। वे कहते हैं ह्न

कोई नय निश्चय से आत्मा को शुद्ध मान,
भयो है स्वच्छन्द न पिछाने निज शुद्धता।
कोई व्यवहार दान तप शीलभाव को ही,
आत्मा का हित मान छोड़ें नहीं मुद्धता।
कोई व्यवहारनय निश्चय के मारग को,
भिन्न-भिन्न जानकर करै निज उद्धता।
जानें जब निश्चय के भेद व्यवहार सब,
कारण है उपचार मानें तब बुद्धता।।

अर्थात् कोई-कोई तो निश्चयनय से आत्मा के शुद्ध स्वरूप को सुनकर अभी अशुद्धावस्था में ही आत्मा को परमात्मा जैसा शुद्ध मानकर स्वछन्द हो जाते हैं। दूसरे, कुछ लोग व्यवहारनय से धर्म संज्ञा को प्राप्त पूजा-पाठ, दान-पुण्य तथा शील, तप के शुभ भावों में ही धर्मबुद्धि से आत्मा का हित मानकर अपनी मूर्खता-अज्ञानता नहीं छोड़ते, आत्मा के वीतराग स्वभावरूप धर्म को जानने का प्रयत्न नहीं करते। तीसरे, कुछ लोग ऐसे हैं जो मानते तो दोनों नयों को हैं, परन्तु दोनों के विषयों को भिन्न-भिन्न जानकर और स्वयं को नयों का ज्ञाता मानकर अपनी मान कषायवश उद्दण्ड प्रवृत्ति नहीं छोड़ते।

जब लोग यह मानें/समझें कि निश्चय और व्यवहार दोनों ही नय जिनवाणी माँ के दो नेत्र हैं। जब हमें शुद्धात्मा को जानना हो, उस समय व्यवहारनय के नेत्र को बंद करके और निश्चय के नेत्र को खोल करके देखना होगा तथा जब आत्मा के भेद-प्रभेदों को जानना होगा तथा पापादि से बचना होगा तो व्यवहारनय से कारण के रूप में कहे गये व्यवहार धर्म को, पूजा-पाठ आदि को अपनाना होगा।

तात्पर्य यह है कि आत्मा से परमात्मा बनने के लिये निश्चयनय के विषयभूत शुद्धात्मा का आश्रय उपादेय है और उस शुद्धात्मा तक पहुँचने के लिए और पापों से बचने के लिए व्यवहारनय का विषय सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की पूजा, भक्ति एवं स्वाध्याय अनुकरणीय है। ऐसा दोनों नयों का सुन्दर सुमेल है।''

द्रव्यदृष्टि में प्रयोजनभूत निश्चय-व्यवहारनय

वस्तुतः तो निश्चयनय एक ही है; परन्तु प्रयोजनवश इसके दो भेद ही किये हैं। एक ह्न शुद्धनिश्चयनय, दूसरा ह्न अशुद्धनिश्चयनय। पुनः शुद्ध निश्चयनय के तीन भेद हैं।

१. परमशुद्धनिश्चयनय, २. साक्षातशुद्धनिश्चयनय, ३. एकदेशशुद्ध निश्चयनय। इसप्रकार निश्चयनय के निम्नांकित चार भेद हो गये।

(क) परमशुद्धनिश्चयनय – इसका विषय पर व पर्याय से रहित अभेद अखण्ड नित्य वस्तु है। अतः इसका कोई भेद नहीं होता। इस नय की विषय वस्तु ही दृष्टि का विषय है, श्रद्धा का श्रद्धेय है।

(ख) साक्षातशुद्धनिश्चयनय – यह नय आत्मा को क्षायिक भावों से, (केवलज्ञानादि से) सहित बताता है। ध्यान रहे, इस दूसरे भेद का एक नाम शुद्धनिश्चयनय भी है, जो मूलनय के नाम से मिलता-जुलता है, अतः अर्थ समझने में सावधानी रखें।

(ग) एकदेशशुद्धनिश्चयनय – इस नय से मतिश्रुतज्ञानादिपर्यायों को जीव का कहा है। जैसे – मतिज्ञानी जीव, श्रुतज्ञानी जीव।

(घ) अशुद्धनिश्चयनय – यह नय आत्मा को रागादि विकारीभावों से सहित होने से रागी-द्वेषी-क्रोधी आदि कहता है।

यहाँ ज्ञातव्य है कि कहीं-कहीं शुद्धनिश्चयनय के तीनों भेदों का प्रयोग समुदायरूप में भी हुआ है। परमशुद्धनिश्चय के अलावा तीनों का व्यवहारनय के रूप में भी प्रयोग किया है। अतः अर्थ समझने में सावधानी की जरूरत है।

व्यवहारनय का कार्य एक अखण्ड वस्तु में, गुण-गुणी में, पर्याय-पर्यायवान में भेद करके तथा देह व जीव आदि दो भिन्न द्रव्यों में अभेद करके वस्तुस्थिति को स्पष्ट करना है।

व्यवहारनय के भी मूलतः चार भेद हैं :-

१. उपचरित असद्भूत व्यवहारनय – इस नय से संष्लेश सम्बन्धरहित परद्रव्य स्त्री-पुत्र, परिवार एवं धनादि को अपना कहा जाता है। इसे न मानने से स्वस्त्री-परस्त्री का विवेक नहीं रहेगा, निजघर-परघर, निजधन-परायाधन आदि का व्यवहार संभव न होने से नैतिकता का ह्रास होगा। लोक व्यवस्था ही बिगड़ जायेगी।

२. अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनय – इस नय से संश्लेष सम्बन्ध सहित देह को ही जीव कहा जाता है, जिसे न मानने से द्रव्यहिंसा से बचाव नहीं हो सकेगा अर्थात् राख (भस्म) मसलना और त्रस जीवों को मसलना एक समान हो जायेगा।

३. उपचरित सद्भूत व्यवहारनय – यह नय आत्मा को ही पर्याय का कर्त्ता-भोक्ता कहता है। जैसे – राग का कर्त्ता जीव, क्रोध का कर्त्ता जीव। इसे न मानें तो संसारी व सिद्ध में भेद नहीं रहने से चरणानुयोग व करणानुयोग के विषय का क्या होगा?

४. अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय – पर्याय-पर्यायवान गुण-गुणी में भेद करना। जैसे – आत्मा में केवलज्ञान आदि अनन्त गुण एवं शक्तियाँ हैं। इसे न मानने से स्वभाव की सामर्थ्य का ज्ञान नहीं होगा।

अब इस विषय को यहीं विराम देकर ह्न धर्म के विविध स्वरूप एवं भेद-प्रभेद की चर्चा करेंगे। **(क्रमशः)**

विद्वत्परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन

हस्तिनापुर : यहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर शुक्रवार, दिनाँक 24 अप्रैल 09 को श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री धर्मभूषणजी महाराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य आचार्यकल्प भारतभूषणजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ।

परिषद् के मंत्री डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल ने परिषद् व उसकी गतिविधियों की जानकारी दी। अधिवेशन को डॉ. भारिल्ल एवं प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचन्दजी बांझल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटिल, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री आदि विद्वानों ने सम्बोधित किया।

अंत में आचार्यकल्प भारतभूषणजी ने विद्वत्परिषद् के कार्यक्रमों की सराहना की और संस्था को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री अखिलजी बंसल ने एवं मंगलाचरण पण्डित सरमनलालजी दिवाकर ने किया ।

पत्र सम्पादक संघ का अधिवेशन सम्पन्न

हस्तिनापुर : यहाँ दिनाँक 25 अप्रैल 09 को अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का द्वितीय राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री धर्मभूषणजी मुनिराज के आशीर्वाद से उनके शिष्य आचार्यकल्प भारतभूषणजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में दि. जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री हुकमचन्द शाह बजाज इन्दौर के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. रमेशजी जैन निवाई, श्री रमेशजी तिजारिया तथा श्री राजेन्द्रजी ठोलिया के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष रवीन्द्र मालव सम्पादक वीर ने की तथा संचालन संघ के महामंत्री अखिल बंसल ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ जैन संदेश की सहसम्पादिका डॉ.ज्योति जैन के मंगलाचरण से हुआ।

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि पत्र सम्पादक संघ के रूप में आज एक बहुत बड़ी शक्ति का उदय हो गया है। इन पत्रकारों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वे देश और समाज को कहां ले जाना चाहते हैं। जैन समाज में विभिन्न मंच हैं, जिन्हें संगठित करने का महान कार्य इस सम्पादक संघ के माध्यम से किया जा रहा है। पत्रकार अपनी गंभीरता को रखते हुए दायित्व का निर्वहन करें। जैन तत्त्वज्ञान को जिन्दा रखने व सामाजिक शांति के लिए इसकी महती आवश्यकता है। सभी पत्रकार महावीर के सिद्धान्तों व अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु अपने मतभेद के मुद्दों को गौण करें तो देश व समाज का हित होगा।

इस अवसर पर श्री हुकमचन्द शाह बजाज, डॉ. रमेशचन्दजी निवाई, श्री राजेन्द्रजी ठोलिया, श्री रमेशजी तिजारिया, श्री रवीन्द्र मालव, श्री अखिल बंसल, श्री नवनीत जैन तथा ज्योति जैन आदि पत्रकारों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्यकल्प भारतभूषणजी ने वर्तमान समय में पत्रकारों की महती भूमिका की चर्चा करते हुए उन्हें समाज हित में कार्य करने की प्रेरणा दी।

पंचकल्याणक समिति की ओर से सभी पत्रकारों एवं अतिथियों को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कानजीस्वामी की जन्म जयंती

1. उदयपुर (चन्द्रप्रभ चैत्यालय) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में मुखर्जी चौक स्थित चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन चैत्यालय से कहानगुरु जुलूस निकाला गया। जुलूस में लगभग 700 मुमुक्षुओं द्वारा घोडे, बग्गी तथा बैण्ड-बाजों सहित शहर के विविधि मार्गों से गुजरकर धर्मप्रभावना की गई।

इस प्रसंग पर चैत्यालय प्रांगण में श्री रूपलालजी गंगावत परिवार की ओर से शांतिविधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम सचिन शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

मंदिर के अध्यक्ष श्री हीरालालजी अखावत ने बताया कि सायंकाल कानजीस्वामी के जीवन चरित्र पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. ममता जैन बाँसवाड़ा के अतिरिक्त पण्डित खेमचंदजी जैन, श्री कन्हैयालालजी दलावत, पण्डित आगम जैन, पण्डित सुजानमलजी गदिया, पं. भोगीलालजी भदावत आदि ने भी कानजीस्वामी के जीवनदर्शन पर अपने विचार व्यक्त किये। **– जिनेन्द्र शास्त्री**

2. उदयपुर (सैक्टर-11) : गुरुदेवश्री की जन्मजयंती पर अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में सैक्टर 11 स्थित शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में रविवारीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों को पण्डित खेमचंदजी जैन एवं श्रीमती नीलमजी जैन द्वारा पूजन प्रशिक्षण दिया गया। बच्चों ने धोती दुपट्टा पहनकर अष्टद्रव्यों द्वारा प्रायोगिक विधि से देव-शास्त्र-गुरु की पूजन सीखी।

पूजन प्रशिक्षण के पश्चात् आयोजित सभा में फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री का दैनिक जीवन में पूजन की उपयोगिता विषय पर विशेष वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित भोगीलालजी भदावत ने की विशिष्ट अतिथि श्री कचरूलालजी मेहता थे।

– आशा सिंघवी, संयोजिका-महिला फैडरेशन

शिक्षण-शिविर सम्पन्न

दाहोद (गुजरात) : यहाँ दिनांक 19 से 26 अप्रैल, 09 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित विमोशजी शास्त्री, पण्डित मेघवीरजी, पण्डित प्रीतमजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री एवं पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर के अंतिम दिन गुरुदेवश्री की जन्मजयंती के अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई, शिविर में श्री चंद्रेशभाई भूता, श्री दीपकभाई सर्राफ, श्री निहालभाई आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

हार्दिक बधाई !

1. **इन्दौर निवासी** श्री मनोहरलालजी काला के सुपौत्र एवं श्री सुशीलकुमारजी काला के सुपुत्र **श्री सुमितजी काला** की शादी के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को 1000/- दानस्वरूप प्राप्त हुये।

2. टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक **चि. विवेकजी सातपुते** डोणगाँव का **सौ.का. सोनाली शरद सर्राफ** नासिक के साथ 17 मई, 09 को विवाह के उपलक्ष में 251/-रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

अद्भुत तरीके से जन्म जयंती

Mumukshus Of North America (MONA) द्वारा आयोजित पूज्य गुरुदेवश्री की 120वीं जन्मजयंती भारत, लंदन, कनाड़ा और अमेरिका के मुमुक्षुओं ने 80 टेलिफोनों से जुड़कर मनायी। विद्वान राजुभाईजी कामदार राजकोट, सौरभजी शास्त्री इन्दौर और अल्पनाजी भारिल्ल मुंबई ने तथा अमेरिका में कार्यरत विविध संस्थानों, लंदन के मुमुक्षुओं और वेबसाइट ह्न **atmadharma.com** के प्रतिनिधियों ने पूज्य गुरुदेवश्री को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की।

अमेरिका में टेलीफोन द्वारा संचालित आध्यात्मिक शिक्षण वर्गों की जानकारी के लिये संपर्क करें ह्न **webmaster@jainism.us**

ह्न रजनीभाई गोसलिया

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ किशनपोल बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी सिवाड़ में दिनांक 26 एवं 27 अप्रैल 09 को दो दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा एवं जिनबिम्ब स्थापना महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ। वेदी में प्रतिमाजी को विराजमान करने का सौभाग्य श्री प्रमोदजी जैन जयपुर प्रिन्टर्स को प्राप्त हुआ। वेदी प्रतिष्ठा एवं जिनबिम्ब की स्थापना संबंधी समस्त कार्य श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक प्रतिष्ठाचार्य डॉ. विमलकुमारजी जैन ने सम्पन्न कराये। इससे पूर्व शिखर पर ध्वजारोहण एवं कलशारोहण किया गया।

इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं श्री मारवाड़ी मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री मारवाड़ी मंदिर में दिनांक 26 अप्रैल से 3 मई तक इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दो दिन अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के **ध्यान का स्वरूप** विषय पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात: नित्य नियम पूजन-विधान के मध्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रौढ कक्षा ली गई तथा पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा और पण्डित कोमलचंदजी टडा (द्रोणगिरी) द्वारा मार्मिक प्रवचन हुये। सायं जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दो प्रवचनों के माध्यम से पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट और पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई का भी लाभ मिला। विधान के अन्तिम दिन ढाई द्वीप जिनायतन हेतु प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं की विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

विधी-विधान के समस्त कार्य श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिडावा, पण्डित संदीपजी शास्त्री बडकुल, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा के सहयोग से सम्पन्न हुए।

ब्र. यशपालजी जैन द्वारा धर्मप्रभावना

1. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 8 से 17 अप्रैल, 09 तक जयपुर से पधारे ब्र.यशपालजी जैन द्वारा 10 दिनों तक धर्मप्रभावना हुई। आपने कर्म की बंध, सत्ता आदि दस अवस्थाओं और प्रारंभ के दो गुणस्थानों का अध्ययन कराया। आपके व्याख्यानों में लगभग 100 से अधिक श्रोता रहते थे। और सभी श्रोता बहुत ही उत्साहित थे। अंतिम दिन 44 लोगों ने परीक्षा भी दी। परिणाम शत-प्रतिशत रहा, जिसमें अधिकांश परीक्षार्थियों ने विशेष योग्यता प्राप्त की।

2. कोलारस(म.प्र.) : यहाँ दिनांक 19 से 27 अप्रैल, 09 तक ब्र.यशपालजी जैन द्वारा तीन मंदिरों में प्रवचन हुए। सुबह का प्रवचन पंचायती मंदिर में गुणस्थान विषय पर होता था। रात्रि का प्रवचन ए.बी. रोड़ स्थित आदिनाथ जिनमंदिर में होता था। आपके द्वारा एक प्रवचन चंद्रप्रभ मंदिर में भी हुआ। दिनांक 26 अप्रैल को स्वामीजी की जन्मजयंती के अवसर पर ए.बी. रोड़ स्थित आदिनाथ जिनमंदिर में पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन हुआ। विधान के मध्य पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर आपका व्याख्यान हुआ। अन्य दिनों में आदिनाथ जिनमंदिर में कर्म की दस अवस्थाओं की कक्षा चली। स्वामीजी के जन्मदिन के अवसर पर बड़े मंदिर में आयोजित सभा में अनेक श्रोताओं ने उनके उपकार का बहुमान पूर्वक उल्लेख किया।

कल्पद्रुम मण्डल विधान सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 1 मई से 5 मई, 09 तक श्रीमती तेजप्रभा धर्मपत्नी स्व.श्री उम्मेदमलजी बड़जात्या के सुपुत्र श्री नरेन्द्र-कल्पनाजी बड़जात्या की ओर से श्री कल्पद्रुम मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजन व विधान के उपरान्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा की समवसरण रचना विषय पर प्रतिदिन कक्षा चली।

दोपहर में बालबोध पाठमाला की कक्षा के उपरान्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने मोक्षमार्गप्रकाशक के माध्यम से अरहंत का स्वरूप तथा ब्र. यशपालजी ने जिनधर्म प्रवेशिका पर कक्षा ली। सायं जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् प्रतिदिन दो प्रवचनों में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री एवं पण्डित परेशजी शास्त्री का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने पण्डित संदीप शास्त्री, पण्डित शशांक शास्त्री, पण्डित प्रशांत शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न कराये।

महत्वपूर्ण सूचना

जैन पथप्रदर्शक के समस्त ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि आपके एड्रेस री-कम्पोज करके कम्प्यूटराईज्ड किये गये हैं। अत: आपसे निवेदन है कि यदि आपके अधूरे/गलत पतों के कारण पत्रिका आप तक नहीं पहुँच रही है, तो कृपया अपने ग्राहक नम्बर के साथ पत्र अथवा टेलीफोन के माध्यम से कार्यालय में सूचित करके इसे सही करावें, जिससे पत्रिका नियमितरूप से आप तक पहुँच सके। **ह्न प्रबंध सम्पादक**

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 28

छठवाँ प्रवचन

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अन्य पदार्थों में इष्टानिष्ट की कल्पना के संदर्भ में पण्डितजी लिखते हैंह्न

''जो अपने को सुखदायक ह्न उपकारी हो उसे इष्ट कहते हैं; अपने को दु:खदायक ह्न अनुपकारी हो उसे अनिष्ट कहते हैं। लोक में सर्व पदार्थ अपने-अपने स्वभाव के ही कर्ता हैं, कोई किसी को सुख-दु:खदायक, उपकारी-अनुपकारी है नहीं। यह जीव ही अपने परिणामों में उन्हें सुखदायक ह्न उपकारी मानकर इष्ट जानता है अथवा दु:खदायक ह्न अनुपकारी जानकर अनिष्ट मानता है; क्योंकि एक ही पदार्थ किसी को इष्ट लगता है, किसी को अनिष्ट लगता है।

जैसे ह्न जिसे वस्त्र न मिलता हो, उसे मोटा वस्त्र इष्ट लगता है और जिसे पतला वस्त्र मिलता है, उसे वह अनिष्ट लगता है। सूकरादि को विष्टा इष्ट लगती है, देवादि को अनिष्ट लगती है। किसी को मेघवर्षा इष्ट लगती है, किसी को अनिष्ट लगती है ह्न इसप्रकार अन्य जानना।

तथा इसीप्रकार एक जीव को भी एक ही पदार्थ किसी काल में इष्ट लगता है, किसी काल में अनिष्ट लगता है। तथा यह जीव जिसे मुख्यरूप से इष्ट मानता है, वह भी अनिष्ट होता देखा जाता है ह्न इत्यादि जानना।

जैसे ह्न शरीर इष्ट है, परन्तु रोगादि सहित हो, तब अनिष्ट हो जाता है; पुत्रादिक इष्ट हैं, परन्तु कारण मिलने पर अनिष्ट होते देखे जाते हैं ह्न इत्यादि जानना। तथा यह जीव जिसे मुख्यरूप से अनिष्ट मानता है, वह भी इष्ट होता देखते हैं। जैसे ह्न गाली अनिष्ट लगती है, परन्तु ससुराल में इष्ट लगती है। इत्यादि जानना।

इसप्रकार पदार्थ में इष्ट-अनिष्टपना है नहीं। यदि पदार्थों में इष्ट-अनिष्टपना होता तो जो पदार्थ इष्ट होता, वह सभी को इष्ट ही होता और जो अनिष्ट होता, वह अनिष्ट ही होता; परन्तु ऐसा है नहीं। यह जीव कल्पना द्वारा उन्हें इष्ट-अनिष्ट मानता है, सो यह कल्पना झूठी है।

तथा पदार्थ सुखदायक ह्न उपकारी या दु:खदायक ह्न अनुपकारी होता है सो अपने आप नहीं होता, परन्तु पुण्य-पाप के उदयानुसार होता है। जिसके पुण्य का उदय होता है, उसको पदार्थों का संयोग सुखदायक ह्न उपकारी होता है और जिसके पाप का उदय होता है उसे पदार्थों का संयोग दु:खदायक-अनुपकारी होता है। ह्न ऐसा प्रत्यक्ष देखते हैं।

किसी को स्त्री-पुत्रादिक सुखदायक हैं, किसी को दु:खदायक हैं; किसी को व्यापार करने से लाभ है, किसी को नुकसान है; किसी के शत्रु भी दास हो जाते हैं; किसी के पुत्र भी अहितकारी होता है। इसलिए जाना जाता है कि पदार्थ अपने आप इष्ट-अनिष्ट नहीं होते, परन्तु कर्मोदय के अनुसार प्रवर्तते हैं।

जैसे किसी के नौकर अपने स्वामी के कहे अनुसार किसी पुरुष को इष्ट-अनिष्ट उत्पन्न करें तो वह कुछ नौकरों का कर्तव्य नहीं है, उनके स्वामी का कर्तव्य है। कोई नौकरों को ही इष्ट-अनिष्ट माने तो झूठ है।

उसीप्रकार कर्म के उदय से प्राप्त हुए पदार्थ कर्म के अनुसार जीव को इष्ट-अनिष्ट उत्पन्न करें तो वह कोई पदार्थों का कर्तव्य नहीं है, कर्म का कर्तव्य है। यदि पदार्थों को ही इष्ट-अनिष्ट माने तो झूठ है।

इसलिए यह बात सिद्ध हुई कि पदार्थों को इष्ट-अनिष्ट मानकर उनमें राग-द्वेष करना मिथ्या है।[१]''

इस मिथ्या मान्यता को जड़मूल से उखाड़ फैंकने का एकमात्र उपाय वस्तुस्वरूप को समझकर प्रयोजनभूत तत्त्वों के बारे में सम्यक् निर्णय करना है। इस कार्य के लिए निरन्तर किये जानेवाले तत्त्वाभ्यास की परम आवश्यकता है।

प्रत्येक द्रव्य की सत्ता पूर्णत: स्वतंत्र है। प्रत्येक द्रव्य अपनी परिणति से अभिन्न है, अपनी परिणति का स्वामी है, अपनी परिणति का कर्ता-भोक्ता भी वही है; किसी अन्य द्रव्य का उसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं है।

आत्मा भी एक द्रव्य है; अत: वह भी पूर्णत: स्वतंत्र सत्तावाला पदार्थ है। वह भी अपनी पर्याय से अभिन्न, उसका स्वामी और उसका कर्ता-भोक्ता भी स्वयं ही है। किसी अन्य पदार्थ का उसके परिणमन में कुछ भी हस्तक्षेप नहीं है।

वस्तुस्वरूप का ऐसा निर्णय ही तत्त्वनिर्णय है, तत्त्वविचार है; जो अगृहीत मिथ्यादर्शनादि से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है।

उक्त विचार और तत्त्वनिर्णय के बल से जब यह सुनिश्चित हो जाता है कि कोई परपदार्थ हमारे लिए इष्ट या अनिष्ट है ही नहीं तो फिर राग-द्वेष करने का कोई आधार ही नहीं रहता, कारण ही नहीं रहता; अत: अनन्तानुबंधी राग-द्वेष आत्मानुभूति होते ही तत्काल नष्ट हो जाते हैं; शेष राग-द्वेष भी क्षीण होने लगते हैं।

जब जड़ ही उखड़ गई तो फिर फल-फूल और पत्तों कबतक हरे-भरे रहेंगे; अब तो उन्हें मुरझाना ही है, उनके पास सूखकर गिर जाने के अतिरिक्त कोई चारा ही नहीं रहता है। परन्तु यह सब होता क्यों नहीं ?

इसके उत्तर में पण्डितजी कहते हैं कि मिथ्यात्व के जोर से यह जीव इसतरह के विचार ही नहीं करता और पर में फेरफार करने के विकल्पों में ही उलझा रहता है; उन पर स्वामित्व, एकाधिपत्य जमाने के विचार में ही उलझा रहता है।

यह मिथ्यात्व का जोर भी कोई और नहीं है; अपने आत्मा का भावकलंक ही है। गोम्मटसार जीवकाण्ड में लिखा है ह्न

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो।
भावकलंकसुपउरा, णिगोदवासं ण मुंचंति।।

निगोद में ऐसे अनंत जीव हैं, जिन्होंने अभीतक त्रसपर्याय की प्राप्ति नहीं की है। वे जीव अगृहीत मिथ्यात्वरूप प्रचुर भावकलंक के कारण ही निगोद के आवास को अनंतकाल तक नहीं छोड़ते।

पर के स्वामित्व और उसमें अपनी इच्छानुसार परिणमन करने-कराने के तीव्र परिणाम और उनकी अनुकूलता को भोगने के तीव्रतम परिणाम ही भावकलंक हैं, जिसके कारण यह जीव अनंतकाल तक निगोद में रहा है और अब सैनी पंचेन्द्रिय मनुष्य पर्याय में भी पर के स्वामित्व और कर्तृत्व के अहंकार-ममकार में मरा जा रहा है।

जब भी कोई प्रतिकूल प्रसंग आता है तो हम उसके कारण दूसरों में खोजने लगते हैं। अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यात्व के जोर से हमारा ध्यान इस ओर जाता ही नहीं है कि इसमें कोई हमारी भी गलती हो सकती है।

जब कोई लड़का किसी लड़की को देखने जाता है तो वह कुछ ही क्षणों में इस निर्णय पर पहुँच जाता है कि मुझे इससे शादी करनी है या नहीं ?

यद्यपि इस निर्णय करने में उसे कुछ भी देर नहीं लगती; तथापि वह अपना निर्णय किसी को बताता नहीं है; गोल-मोल बातें ही करता रहता है और अन्त में कह देता है कि है तो सबकुछ ठीक, पर उत्तर तो मेरे माता-पिता ही देंगे।

आज के लड़के बहुत चतुर हो गये हैं। वे जानते हैं कि यदि मैंने अभी स्पष्ट कह दिया कि मुझे लड़की पसन्द नहीं है तो अभी का चाय-पानी भी संकट में पड़ जायेगा और यह कह दिया है कि मुझे तो लड़की बहुत पसन्द है तो पिताजी के सौदाबाजी करने का अवसर नहीं मिलेगा।

अत: वह अपने मन की बात मन में ही रखता है और मीठी-मीठी बातें करके ऐसा संकेत देता है कि जैसे उसे लड़की बहुत पसन्द है।

लड़की वालों के पड़ौस में उस लड़के की जान-पहिचान का एक परिवार रहता था। जब लड़का जाने लगा तो वह उनसे मिलने के लिए उनके घर गया। उनके यहाँ दस-पाँच मिनिट रुक कर अपने घर चला गया।

लड़के के पिता से जब उत्तर मांगा गया तो उत्तर मिला कि अभी लड़के का विचार दो-चार वर्ष शादी करने का ही नहीं है।

अरे, भाई ! अभी शादी करने का विचार ही नहीं था तो फिर वह लड़की देखने आया ही क्यों ? व्यर्थ ही दूसरों को परेशान करने से क्या प्रयोजन है ?

प्रयोजन तो कुछ भी नहीं है; पर लड़केवालों ने नापसंदगी व्यक्त किये बिना, मना करने का एक तरीका निकाल लिया है।

यह उत्तर सुनकर लड़कीवाले सोचने लगे कि लड़का को तो लड़की बहुत पसन्द थी; उसकी बातों से तो यही लगता था कि काम बन ही गया है, पर वह पड़ौसी के यहाँ गया था। लगता है उसने भड़का दिया है, हमारा काम बिगाड़ दिया है। हमने इसका क्या बिगाड़ा है, यह हमारे पीछे क्यों पड़ा है; कुछ समझ में नहीं आता। इसके रहते तो हमारी लड़की की शादी होना संभव ही नहीं है, अब हम करें तो करें क्या ?

यद्यपि लड़के वालों के इन्कार करने में पड़ौसी का रंचमात्र भी योगदान नहीं था; पर लड़की वालों के दिमाग में तो यही जमा था कि उनके अहित में सदा पड़ौसियों का ही हाथ रहता है।

''हमारी लड़की या हममें भी कोई कमी हो सकती है'' ह्न यह सोचने के लिए तो कोई तैयार ही नहीं है।

इसीप्रकार हम अपने सुख-दु:ख के कारण अपने में खोजने के लिए तैयार ही नहीं हैं, पता चल जाने पर भी मानने के लिए तैयार नहीं है; क्योंकि अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यात्व के कारण हमारा यह तो पक्का निर्णय है ही कि हमारा बिगाड़-सुधार कोई न कोई परपदार्थ ही करता है। बस खोजना तो यह है कि वह कौन है ? सो जब कुछ पता नहीं चलता तो हम अपनी कल्पना से किसी न किसी पर के माथे मढ़ देते हैं।

मैं यह गारंटी तो नहीं दे सकता कि पड़ौसी पूरी तरह निर्दोष है, उसने कुछ भी नहीं कहा होगा; क्योंकि भारत में ऐसे पड़ौसियों की कमी नहीं है कि जो अकारण ही दूसरों के काम बिगाड़ने की सोचते रहते हैं; पर यह गारंटी अवश्य देना चाहता हूँ कि उस लड़के के भड़कने में पड़ौसी का कोई योगदान नहीं है; क्योंकि जिस लड़के को जो लड़की पसन्द आ जाती है तो वह किसी के भी भड़काने में नहीं भड़कता, समझाने से नहीं समझता, यहाँ तक माँ-बाप आदि गुरुजनों की भी नहीं सुनता, सम्पूर्ण सम्पत्ति से बेदखल कर देने की धमकी से भी नहीं डरता, माँ की अश्रुधारा से भी नहीं पिघलता। ऐसे अनेक उदाहरण पौराणिक कथानकों में और इतिहास के पन्नों में तो मिल ही जाते हैं; पर आज के भारत में तो गली-गली में मिल जायेंगे।

पड़ौसी ने कुछ नहीं किया है, यदि किया भी हो तो उसके करने से कुछ नहीं हुआ है; असल बात तो यह है कि लड़का ही लड़की पर नहीं रींझ पाया। पर हमारी यह बात कौन मानता है; क्योंकि सभी लोग अपनी असफलता को किसी दूसरे के नाम पर ही मढ़ना चाहते हैं।

इसीप्रकार हमारे सुख-दु:ख के कारण हममें ही विद्यमान हैं, कोई किसी को सुखी-दु:खी नहीं करता। न तो हमें किसी से डरने की जरूरत है और न किसी से सुख की भीख मांगनी है; पर अनादिकालीन मिथ्या मान्यता के जोर में कौन सुनता है हमारी बात। **(क्रमश:)**

17 मई 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

डॉ. भारिल्ल पर एम.एड.स्तरीय शोधकार्य

माननीय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के शिक्षाशास्त्रीय व्यक्तित्व को उभारते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध वसुन्धरा (महिला शिक्षक प्रशिक्षण) महाविद्यालय जयपुर के प्राचार्य डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन के निर्देशन में श्रीमती नीतू चौधरी ने **शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के दर्शन का शैक्षिक अध्ययन** विषय पर अपना लघुशोध प्रबन्ध 4 मई 2009 को प्रस्तुत किया है।

श्रीमती नीतू चौधरी द्वारा डॉ. जैन के निर्देशन में किये गये इस शोधग्रन्थ में डॉ. भारिल्ल की शिक्षाशास्त्रीय गतिविधियों, मान्यताओं एवं शैक्षिक विचारों का अन्वेषणात्मक अध्ययन करते हुए शिक्षाशास्त्र के अष्टविध अंगों का सविशद विवेचन भी किया गया है। अन्त में सारांश एवं भावी शोध संभावनाएँ भी व्यक्त की गई हैं।

उच्च शिक्षा में इस मौलिक एवं शोधपूर्ण कृत्य के लिए जैनपथप्रदर्शक परिवार डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन एवं शोधकर्त्री श्रीमती नीतू चौधरी का हार्दिक अभिनन्दन करता है।

शोक समाचार

1) **मियामी (यू. एस. ए)** निवासी श्री महेंद्रभाई शाह की धर्मपत्नी रंजनबेन शाह का निधन 1 मई 09 को हो गया। वे एक तत्त्वप्रेमी धार्मिक महिला थी। उनका पूरा परिवार धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। डॉ. भारिल्ल प्रतिवर्ष उनके यहाँ एक सप्ताह के लिए जाते हैं और इस वर्ष भी जायेंगे।

2) **भोपाल निवासी** पण्डित कस्तूरचन्दजी की धर्मपत्नी एवं प्रो. अजयजी जैन की माताजी **श्रीमती कमलाबाई जैन** का 9 अप्रैल, 09 को प्रात: आकस्मिक निधन हो गया। आपमें तत्त्वचर्चा एवं स्वाध्याय की विशेष लगन थी, आपने कई बार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का सान्निध्य भी प्राप्त किया था। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक को 500/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्व यही भावना है।

आगामी कार्यक्रम ह्व

1. **भिण्ड (म.प्र.) :** यहाँ के.के.पी.पी.एस. उज्जैन एवं श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट भिण्ड तथा अ.भा.जैन युवा फैडरेशन शाखा ह्व देवनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में पाँचवे जैन बाल संस्कार शिविरों का आयोजन 31 मई से 11 जून, 09 तक किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के कुल 81 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। **सम्पर्क ह्व** सुरेश जैन (09826646644), आशीष शास्त्री (09826761410)

2. **अलवर (राज.) :** यहाँ अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा अलवर द्वारा श्रुतपंचमी के अवसर पर के.के.पी.पी.एस. उज्जैन, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा एवं श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में 22 मई से 29 मई 09 तक अलवर, दौसा एवं भरतपुर जिलों के 26 स्थानों पर प्रथम बार एक साथ **जैन बाल संस्कार शिविर** का आयोजन किया जा रहा है। शिविर पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के निर्देशन तथा फैडरेशन के अध्यक्ष शशीभूषणजी जैन के संयोजकत्व में सम्पन्न होगा। अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें। **ह्व अजित शास्त्री-9414499549**

डॉ. भारिल्ल के साहित्य पर सेमिनार

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में चलने वाले कल्पद्रुम मंडल विधान के अवसर पर दिनांक 3 मई 09, रविवार को **जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान** विषय पर संगोष्ठी रखी गई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित संजयजी शहा गनोड़ा एवं डॉ. पारसमलजी उदयपुर थे।

पण्डित संजयजी शहा, गनोडा ने अपना शोध निबंध डॉ. साहब की अमर कृति धर्म के दशलक्षण पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि 20 वीं शताब्दी में आध्यात्मिक युग के प्रणेता आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान को आज 21 वीं शताब्दी में भी जन-जन तक सरस-सरल और सुबोध शैली में पहुँचाने का सफल प्रयास करने वाले यदि किसी एक मनीषी का नाम लिया जावे तो वह हैं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, जिन्होंने अपनी वाणी व लेखनी से आध्यात्मिक गूढ रहस्यों को भी अपने प्रखर चिंतन व सरल शैली द्वारा सुगम बना दिया हैं।

डॉ. पारसमलजी ने अपना शोध निबंध समयसार अनुशीलन पर प्रस्तुत करते हुए समापन में कहा कि डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक योगदान की बात करना बहुत छोटी बात हैं। ये तो छोटे साहित्यकारों की बातें हैं, जिनके लाखों श्रोता पूरी दुनिया में हैं, जिनकी 40-42 लाख से ज्यादा किताबें बिक चुकी हैं, जिनके 10 हजार से ज्यादा पृष्ठ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके सैकड़ो शिष्य पूरी दुनिया में तत्त्व का प्रचार कर रहे हैं; वे किसी साहित्यकार के हाथ में नहीं हैं, दार्शनिक के हाथ में नहीं हैं; इनकी चर्चा तो इतिहास करेगा। आगामी अनेक वर्षों तक जैन इतिहास में आपका नाम मुख पृष्ठ की प्रथम पंक्ति में बना रहेगा। उनका वास्तविक व्यक्तित्व देखने के लिए लाखों परिवारों में उनका प्रभाव देखा जा सकता है। डॉ. भारिल्ल की बात करने में ही हमको प्रेरणा मिलती है।

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127